'संवदिया'

स्नातक द्वितीय वर्ष

MIL (HINDI) - II

(कथा - पंचक)

श्याम किशोर प्रसाद
(सह प्राध्यापक)
आर. एन. कॉलेज,
हाजीपुर, वैशाली

दिनांक - 17-08-2020

'संवदिया' कहानी हिन्दी साहित्य में आंचलिकता के पर्याय फणीश्वरनाथ रेणु रचित उनकी प्रतिनिधि कहानियों में एक है।

यह कहानी आज के संचार-युग में अप्रासंगिक हो चुके ग्रामीण एवं विलुप्त पात्र हरगोबिन संवदिया का मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत करता है। वह मानवीय संवेदना से ओतप्रोत दुर्लभ मनुष्य है। साथ ही, गाँव की बड़ी हवेली की बड़ी बहुरिया के नारी मन की कोमल भावनाओं पीड़ा, व्यथा एवं दुःख का भी करुण-वर्णन इस कहानी में बखूबी हुआ है।

रेणु जी ने इस कहानी में जहाँ एक ओर खंडहर में तब्दील हो रही बड़ी हवेली की दशा को दिखाया है, जो ढहती सामंती व्यवस्था के अवशेष का प्रतीक है। वहीं दूसरी ओर अपने पति की मृत्यु के बाद निःसंतान बड़ी बहुरिया के तीनों देवरों का शहर चले जाना शहरीकरण और ग्रामीण आभिजात्य वर्ग के पलायन का भी संकेत है। देवरों के स्वार्थ एवं निष्ठुरता से आहत बड़ी बहुरिया की

मनःस्थिति का विवेचन अत्यंत सूक्ष्मता के साथ इस कहानी मे हुआ है।

कहानी का प्रारंभ बड़ी बहुरिया द्वारा हरगोबिन संवदिया की बुलाहट से होता है। हरगोबिन संवाद की गोपनीयता के महत्व को इन शब्दों में व्यक्त करता है —

। चाँद-सूरज को न मालूम हो,
परेवा-पंछी भी न जाने।

इसी सोच एवं कर्तव्य-बोध के साथ वह बड़ी हवेली मे दाखिल होता है। वहाँ वह बूढ़ी मोदिआइन को उधार के लिए बड़ी बहुरिया से तगादा करते देखता है।

इस दृश्य के पीछे रेणु एक परिदृश्य रचते हैं, जो हरगोबिन के मन में flashback (फ्लैश बैक) की तरह चल रहा है —

बड़े भईया की मृत्यु, तीनो भाईयों मे हिस्से के लिये झगड़ा, रैयतों का जमीन पर दखल, तीनों भाईयों का गाँव छोड़कर शहर में जा बसना, केवल अगहन में और आम के मौसम मे ही गाँव आना - - -

उक्त परिदृश्य से पाठक एवं श्रोता को बड़ी हवेली एवं बड़ी बहुरिया की वर्तमान दयनीय अवस्था का पता चल जाता है।

बूढ़ी मोदिआइन के जाने के बाद बड़ी बहुरिया अपनी माँ के पास संवदिया हरगोबिन को ले जाने वाला संदेश सुनाती है :—

...."माँ से कहना, मैं भाई-भाभियों की नौकरी करके पेट पालूंगी। बच्चों की जूठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी, लेकिन यहाँ अब नहीं... अब नहीं रह सकूंगी। ...कहना, यदि माँ मुझे नहीं ले जाएगी तो मैं किसी दिन गले में घड़ा बाँधकर पोखरे में डूब मरूंगी..... बथुआ साग खाकर कब तक जीऊँ? किसलिए... किसके लिए।"

रास्ते-खर्च के लिए पाँच रुपए का नोट दे रही बड़ी बहुरिया को हरगोबिन ने मना कर दिया और दस बजे की गाड़ी से ही जाने का आश्वासन देकर चल पड़ा। यहाँ रेणु जी ने पुनः फ्लैश बैक में ले जाते हैं। —

संवदिया को लोग प्रायः निठल्ला, कामचोर, पेटू, औरतों का गुलाम आदि कहते हैं। लेकिन संवाद पहुँचाने का काम सभी नहीं कर सकते।

हरगोबिन ट्रेन से कटिहार पहुँचता है और पुनः थाना बिहपुर के लिए ट्रेन बदलता है। पूरी यात्रा में उसके मन में बड़ी बहुरिया का करुण संवाद गोते लगाता रहता है — "बथुआ साग खाकर कब तक जिऊँ?" हरगोबिन अनेक बार अनेक लोगों का संवाद पहुँचाया है किन्तु इतना करुण संवाद पहली बार लेकर जा रहा है।

थाना सिंहपुर में ट्रेन से उतरकर बड़े भारी मन से हरगोविन गाँव की पगडंडी पर पैर बढ़ाया और अनिच्छापूर्वक गाँव में प्रवेश किया।

गाँव में पहुँचते ही लोगों ने हरगोविन को पहचान लिया कि जलालगढ़ का संवदिया आया है। लेकिन बड़ी बहुरिया के बड़े भाई को हरगोविन ने परिचय दिया तब उन्होंने अपनी दीदी (बड़ी बहुरिया) का समाचार पूछा। हरगोविन ने जवाब दिया - "भगवान की दया से सब राजी-खुशी है।"

मुँह हाथ धोने के बाद जब हरगोविन की बुलाहट आँगन में हुई तो वह काँपने लगा और उसकी धड़कन बढ़ गई। बूढ़ी माँ के पूछने पर वह बड़ी बहुरिया का सिसकियों से भरा संवाद नहीं सुना पाया और सफेद झूठ बोल गया कि कोई संवाद नहीं है, वह सिर्फ सिया जाँव आया था तो दर्शन करने चला आया। ऐसे बड़ी बहुरिया ने कहा है कि "दशहरे में छुट्टी हुई तो गंगा जी के मेले में आकर माँ से भेंट-मुलाकात कर जाऊँगी।"

एक गहरे अन्तर्द्वन्द्व में फँसा मानवीय संवेदना से लबरेज हरगोविन संवदिया के कर्त्तव्य एवं गाँव की लक्ष्मी एवं प्रतिष्ठा बड़ी बहुरिया के गाँव छोड़ने के अपराध-बोध के बीच अपने कर्त्तव्य को सूली पर चढ़ा देता है।

अन्ततः, हरगोबिन जलपान तो कर लेता है, लेकिन रात में भोजन करते समय बड़ी बहुरिया का चेहरा सामने आ जाता है। वह सोचता है — बड़ी बहुरिया बथुआ साग उबालकर खा रही होगी। उससे खाया नहीं गया।

flashback - "संवदिया डट कर खाता है और अफर कर सोता है।" किन्तु हरगोबिन को रात भर नींद नहीं आई, क्योंकि वह बड़ी बहुरिया का संवाद नहीं सुना पाया था। वह निश्चय करता है कि बूढ़ी माँ को सुबह उठते ही सही संवाद सुना देगा कि बड़ी बहुरिया कष्ट में है, शीघ्र बुलवा लीजिए। लेकिन, सुबह में भी वह संवाद सुनाने में असमर्थ रहा तथा जल्दी वापस जाने की बात बूढ़ी माँ को कहा। बूढ़ी माँ ने बासमती का चूड़ा देकर हरगोबिन को विदा किया। हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया के बड़े भाई से राहखर्च भी नहीं लिया।

हरगोबिन के पास कटिहार स्टेशन तक ही टिकट के पैसे थे। उसने कटिहार तक का ही टिकट लिया। कटिहार से जलालगढ़ बीस कोस की यात्रा पैदल ही की। ट्रेन में सूरदास के निर्गुन (गीत) से उसका जी स्थिर हुआ। फिर पैदल यात्रा करते भूखे-प्यासे वह बड़ी हवेली की चौखट तक आते-आते बेहोश होकर गिर पड़ा। जब होश में आया, तो बड़ी बहुरिया उसे दूध पिला रही थी। उसने बड़ी बहुरिया को माँ के रूप में एवं स्वयं को उनका बेटा मानते हुए उन्हें गाँव छोड़कर नहीं जाने का अनुनय किया। बड़ी बहुरिया को भी संवाद-

भेजने का पश्चाताप था।

'रेणु' एक महान् कथा-शिल्पी है। संवदिया जो एक वंचित ग्रामीण-पात्र है, उसके अंदर निहित मानवीय गुण करुणा, कर्त्तव्य बोध, ईमानदारी को इस कहानी के माध्यम से रेणु जी एक ऊँचाई प्रदान करते हैं।

कहानी की भाषा प्रांजल है एवं शब्द लोक-जीवन से लिये गए हैं। आरंभ से अंत तक कहानी के गठन में कोई रिक्तता नहीं है। कहानी में यथावश्यक लोकगीतों को भी पिरोया गया है :-

- हमरो संदेश ले के जाहु रे संवदिया।
- नैहर के सुख सपन भयो - - -

वस्तुतः, रेणु जी ने आँचलिकता के धागे में संवदिया कहानी को पिरोते हुए हरगोबिन एवं बड़ी बहुरिया का दुर्लभ चित्र प्रस्तुत किया है।

— o —

दिनांक - 17.08.2020

श्याम किशोर प्रसाद
(सह प्राध्यापक, हिन्दी)
आर॰ एन॰ कॉलेज, हाजीपुर